सुबह का स्वर्गीय मन्ना (1 अक्टूबर)

भजन संहिता 39:1 मैं ने कहा, मैं अपनी चाल चलन में चौकसी करूंगा, ताकि मेरी जीभ से पाप न हो; जब तक दुष्ट मेरे सामने है, तब तक मैं लगाम लगाए अपना मुंह बन्द किए रहूंगा।

शायद अनुभव का हर व्यक्ति इस कथन से पूरी तरह सहमत होगा कि जीभ शरीर के किसी अन्य सदस्य से परे अपने प्रभाव में प्रबल है, या तो अच्छे या बुरे के लिए। अनुभव यह भी सिखाता है कि ज्यादातर लोगों के साथ जीभ के अलावा किसी अन्य अंग को नियंत्रित करना आसान है। जीभ इतनी निपुण एक सेवक है कि प्रत्येक महत्वाकांक्षा और पतित प्रकृति का जुनून और झुकाव इसे बुराई के लिए एक सेवक या माध्यम के रूप में उपयोग करना चाहता है। इसलिए, एक मसीही के हिस्से में, सतर्कता, ज्ञान और देखभाल में वृद्धि की आवश्यकता है, ताकि उसके शरीर के इस सदस्य को नियंत्रित किया जा सके और इसे मसीह में नए मन के अधीन किया जा सके, ताकि यह स्वयं के लिए या दूसरों के लिए बाधा नहीं बने, बल्कि, इसके विपरीत, सकेत मार्ग में एक तरीके से मददगार हो। `Z.'97-156` R2156:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (2 अक्टूबर)

फिलिप्पियों 3:13 जो बातें पीछे रह गई हैं उन को भूल कर, आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ।

हम उन बातों को भूल जाते हैं जो पीछे रह गई हैं, हमें ऐसा ही करना चाहिए, क्योंकि यह सही है। क्योंकि परमेश्वर भी उन्हें भूल जाते हैं, और घोषणा करते हैं की उन्होंने हमारी सारी कमियों को अपनी पीठ के पीछे डाल दिया है; ताकि हमारी कमियाँ प्रभु यीशु के बलिदान के मूल्य के द्वारा परमेश्वर की दृष्टि से ढक जाएँ, क्योंकि प्रभु यीशु ने हमसे प्रेम किया और हमारे पापों के लिए जान दी, और हम भी प्रभु को प्रेम करते हैं, उनपर हम भरोसा करते हैं, और उनके पदचिन्हों पर हम कम या अधिक उन दोषों के साथ चलने का प्रयत्न कर रहे हैं जो हमें इस शरीर में विरासत में मिली हैं। हमारे सुझाव का यह मतलब नहीं है कि गलती या असफलताओं को हल्के से लेना चाहिए या उन्हें जल्दी से भुला दिया जाना चाहिए; उन्हें हमारी क्षमता की सीमा तक सुधारा जाना चाहिए, और इन गलतियों के लिए प्रतिदिन दिव्य क्षमा मांगी जानी चाहिए। `Z.'04-23` R3306:2 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (3 अक्टूबर)

भजन संहिता 119:165 तेरी व्यवस्था से प्रीति रखने वालों को बड़ी शान्ति होती है; और उन को कुछ ठोकर नहीं लगती।

हमारी विनतियाँ, अनुग्रह और ज्ञान के लिए, आत्मा के फलों के लिए, प्रभु और भाइयों की सेवा के लिए और परमेश्वर के प्रिय पुत्र की समानता में अधिक से अधिक बढ़ने के लिए अवसरों का होना चाहिए। इन परिस्थितियों के अंतर्गत, कौन संदेह कर सकता है कि "परमेश्वर की शांति जो सारी समझ से परे है ", "ऐसे" हृदयों "और उनके" विचारों" की रक्षा करेगी? यह शांति आप ही बड़ी बुराइयों में से एक को जो कई लोगों के हृदयों को प्रभावित करती है दूर कर देगी। जिनका ह्रदय प्रभु की आत्मा से इतना भरा होगा, वहाँ स्वार्थ और महत्वाकांक्षा को बहुत कम जगह मिलेगी। दिव्य शांति हमारे हृदयों में वास कर सकती है, और उनमें शासन कर सकती है, ताकि दुनिया की चिंता और उथल-पुथल को दूर रखा जा सके, तब भी जब हम इन विकट परिस्थितियों से घिरे हों - तब भी जब खुद विरोधी शैतान अपने धोखेबाज दलालों के माध्यम से हमें घेर रहे हों। `Z.'04-24` R3306:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (4 अक्टूबर)

मत्ती 4:19 यीशु ने उनसे कहा, "मेरे पीछे चले आओ, तो मैं तुम को मनुष्यों के पकड़नेवाले बनाऊंगा"।

हमारे जीवन के हर मामले हमें ऐसा पाठ पढ़ाएंगे जो आनेवाले भविष्य में हमारे लिए लाभदायक हो, यदि हम उस पाठ को ग्रहण करते हैं। शायद मछली पकड़ने के व्यवसाय में कुछ विचित्र था -- कुछ इस तरह से विचित्र था, जिसमें प्रेरितों को अपना सारा जीवन उस महान कार्य में लगा देना था। हमारे प्रभु अपने बुलावे में इस बात का संकेत करते हैं। मछली पकड़ने के लिए ऊर्जा, चतुरता, मछली को उचित चारा देना की आवश्यकता होती है और चौथा गुण यह कि खुद मछुआरे को मछली की दृष्टि से दूर छुपकर रहना होता है। और आत्मिक मछली पकड़ने में यानी लोगों को इस सत्य की ओर लाने के लिए भी, इन चारों गुणों की जरूरत है, जिनमें लगने का प्रभु यीशु हमें विशेषाधिकार देते हैं। हमें याद रखना चाहिए कि जब हम मछली को पकड़ने जाते हैं, तब वे आसानी से सतर्क हो जाती हैं, जब उन्हें पता चलता है कि कोई भी उन्हें पकड़ सकता है, उसी तरह मनुष्य भी शर्माता है की कोई भी उन्हें पकड़े - खासकर यदि उन्हें थोड़ा सा भी सन्देह होता है की वे अपनी आज़ादी खो देंगे: और इस प्रकार से सच्चाई के लिये समर्पण करना या बपतिस्मा लेना दुनिया को अपनी स्वतंत्रता खोने जैसा लगता है। `Z.'04-26,27` R3308:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (5 अक्टूबर)

इब्रानियों 12:3 इसलिये उस पर ध्यान करो, जिस ने अपने विरोध में पापियों का इतना वाद-विवाद सह लिया कि तुम निराश होकर हियाव न छोड़ दो।

आह, कितने परमेश्वर के सच्चे बच्चे अपने मन में साहस छोड़ देते हैं और उनका मन कच्चा हो जाता है, और वे मुख्य इनाम को खोने के खतरे में होते हैं क्योंकि वे प्रभु पर और विश्वासी होकर प्रभु ने जिन विरोधों को सहा उसपर सोचने में, अध्ययन करने में, समझने में और ध्यान करने में असफल हो जाते हैं। जैसे वे प्रभु की परिपूर्णता पर ध्यान करेंगे और कैसे, जैसा कि प्रभु में दर्शाया गया है, ज्योति अंधेरे में चमकी और इसकी सराहना नहीं की गई, उसी प्रकार वे उम्मीद करेंगे कि उनसे चमकने वाले प्रकाश की भी सराहना नहीं की जाएगी। जैसे वे इस बात पर विचार करेंगे कि कैसे प्रभु हर दृष्टि से अन्यायपूर्ण तरीके से और धार्मिकता के लिए सताये गए थे, और फिर यह देखेंगे कि भले ही उनका अपना आचरण अच्छा है लेकिन अपरिपूर्ण है, यह उन्हें अच्छे सैनिकों के रूप में कठोरता को सहन करने के लिए मजबूत करेगा, और अच्छा कार्य करने से थकने नहीं देगा, और विरोधों के बीच में उन्हें मूर्छित होने नहीं देगा। `Z.'04-38` R3313:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (6 अक्टूबर)

लूका 9:55,56 तुम नहीं जानते कि तुम कैसी आत्मा के हो। क्योंकि मनुष्य का पुत्र लोगों के प्राणों को नाश करने नहीं वरन बचाने के लिये आया है।

ऐसा ही प्रभु के सभी चेलों के साथ होना चाहिए: उनका निरंतर अध्ययन इसलिये होना चाहिए कि अपने लिए दया की इच्छा रखते हुए दूसरों को सजा देने और अन्य लोगों को नष्ट करने के उस अति आलोचक स्वभाव से बचे रहें। प्रभु ने जो नियम स्थापित किया है, वह यह है कि हमें प्रभु से दया की अपेक्षा उसी अनुपात में करनी चाहिए, जिसमें हम दूसरों के प्रति इस अनुग्रह का उपयोग करेंगे ...दूसरों में दोष खोजने वाला स्वभाव जो हर किसी पर आरोप लगाने और निंदा करने के लिए तैयार हो, हृदय की एक गलत स्थिति को दर्शाता करता है - एक ऐसी स्थिति जिसके विरुद्ध प्रभु के सभी लोगों को सावधान रहना चाहिए ... करुणा, भलाई, प्रेम, चरित्र के वे तत्व हैं जिन्हें परमेश्वर आत्मिक इस्राएलियों में देखने की इच्छा रखते हैं और जिसके बिना हम लंबे समय तक उनके बच्चे नहीं बने रह सकते। `Z.'04-43` R3316:4,6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (7 अक्टूबर)

मत्ती 7:26 परन्तु जो कोई मेरी ये बातें सुनता है और उन पर नहीं चलता, वह उस निर्बुद्धि मनुष्य के समान ठहरेगा जिसने अपना घर बालू पर बनाया।

प्रभु के बहुमूल्य वादों पर जो आशाएँ बनी है यदि उसको हम कर्म के द्वारा नहीं दिखाते हैं, तब हमारी आशाएँ बालू पर बनी हैं। यह केवल समय की बात है, जब वह महान परीक्षा का समय आएगा और ऐसी आशाएं बेकार से भी बदतर दिखाई देंगी। कर्म के बगैर रखी गई आशाएँ उनको धोखा देती हुई मालूम होंगी, जिन्होनें खुद को इस आश्वासन के तहत सुरक्षित समझा था की उन्हें राज्य में एक हिस्सा मिलेगा ... इसके विपरीत जिनकी आशाएं आज्ञापालन पर बनी है, जिनके ह्रदय और जीभ प्रभु को स्वीकार करते हैं और उनका आदर करते हैं, उनकी क्रियाएं उनके विश्वास को पक्का करती हैं, और वे ऐसा फल लाते हैं जो प्रभु के साथ उनके सम्बन्ध की गवाही देते हैं -- वे जीवन के हर तूफ़ान रूपी मुश्किल पर जय पाकर आगे बढ़ेंगे और कभी भी अस्थिर नहीं होंगे, कभी भी नहीं डगमगाएँगे, क्योंकि यही आशाएं उनके जीवन का आधार हैं। `Z.'04-46` R3318:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (8 अक्टूबर)

गलातियों 6:7,8 धोखा न खाओ, ... जो अपने शरीर के लिये बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा; और जो आत्मा के लिये बोता है, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा।

जब हम शारीरिक, स्वार्थी, अन्यायी, अधर्म की इच्छा को हमारे हृदय और जीवन में बहने देते हैं, तब हम हर बार शरीर के लिये बोते हैं, और प्रत्येक बोना अतिरिक्त बुवाई को आसान बनाता है और इस तरह जो अंत होता है वो मृत्यु है - दूसरी मृत्यु। इसके विपरीत, स्वार्थ के प्रति शारीरिक इच्छाओं का प्रत्येक प्रतिरोध, आदि आत्मा के लिए बोना है, और प्रत्येक बार नये मन, नई इच्छा का अभ्यास, आत्मिक दिशाओं में उन चीजों की ओर करना जो शुद्ध हैं, जो चीजें हैं श्रेष्ठ हैं, जो चीजें अच्छी हैं, जो चीजें सत्य हैं, आत्मा के लिये बोना है, जो आत्मा के अतिरिक्त फलों को लायेगा, आत्मा के अनुग्रहों को लायेगा, और यह अगर दृढ़ता से जारी रहता है, तो अंततः हमें प्रभु के अनुग्रह से भरे वादों और प्रबंधों के साथ तालमेल में लायेगा - हमें अनंत जीवन और राज्य मिलेगा। `Z.'04-57` R3323:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (9 अक्टूबर)

मत्ती 8:26 हे अल्पविश्वासियों, क्यों डरते हो?

प्रत्येक अनुभव हमारे लिए मददगार होना चाहिए। यदि पहली बार हम डर गए थे और रोकर चिल्ला रहे थे, और हमें राहत मिली, और हमने प्रभु यीशु मसीह से ये डाँट खाई कि, "हे अल्पविश्वासियों"! तो जल्द ही जब हम एक सबक से दूसरे सबक की ओर जाते हैं, हमारे स्वामी हमसे उम्मीद करते हैं कि -- और हमें भी खुद से यही उम्मीद करनी चाहिए कि हम ज्यादा बड़ा विश्वास रखें, ज्यादा बड़ा भरोसा रखें,ज्यादा बड़ी शान्ति रखें, प्रभु में हम ज्यादा आनन्दित रहें, इस बात पर दृढ़ भरोसा रखें कि प्रभु हमारे साथ उपस्थित हैं और उनकी देखभाल हम पर है, और इस बात पर भी दृढ़ भरोसा होना चाहिए कि प्रभु हमें शैतान और हर प्रकार की बुराई से छुटकारा दिलाकर हमें सुरक्षित किनारे पर ला सकते हैं जिसकी खोज हम कर रहे हैं -- जो की स्वर्गीय राज्य है। `Z.'04-60` R3325:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (10 अक्टूबर)

कुलुस्सियों 3:9,10 तुमने पुराने मनुष्यत्व को उसके कामों समेत उतार डाला है। और नए मनुष्यत्व को पहिन लिया है जो अपने सृजनहार के स्वरूप के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने के लिये नया बनता जाता है।

केवल हमारे मन में, और हमारी इच्छा में पुरानी चीज़ें बीत गई हैं और सब चीज़ें नई हो गई हैं। वाकई में हमारा पहले पुनरुथान में बदलना तब पूरा होगा जब यह मरनहार देह अमरता को पहिन ले, जब यह नाशवान देह अविनाशी दशा में जिलाई जाये - महिमा में, सामर्थ में और आत्मिक देह के साथ जिलाई जाये। लेकिन इस बीच में, पहले पुनरुत्थान में भागी होने के योग्य होने के लिए, यह हमारे लिए आवश्यक है कि हम यह प्रदर्शित करें कि वह सब कुछ जो प्रभु हमें बनाना चाहते हैं, हम वह बनने के लिये पूरी तरह से अपने मन से इच्छुक हैं, और यही प्रयत्न और चाहत भी है की हम वैसा ही बने जैसा प्रभु हमें बनाना चाहते हैं; और हमारे मनों और विचारों पर सख्त पहरा लगाकर ही हम इस बात को प्रभु को और अपने आप को अच्छी तरह से दिखा सकते हैं या साबित कर सकते हैं। `Z.'04-25` R3307:4 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (11 अक्टूबर)

यशायाह 52:11 हे यहोवा के पात्रों के ढोनेवालो, अपने को शुद्‌ध करो।

परमेश्वर के दिव्य तरीके स्पष्ट रूप से उनके सेवकों और बुराई के सेवकों के बीच में फर्क करते हैं। परमेश्वर के लिए गवाही देना या सच्चाई के लिए राजदूत होने का विशेषाधिकार परमेश्वर के खुद के लोगों के लिए

आरक्षित है। परमेश्वर न तो बुरे लोगों को और न ही गिरे हुए दुष्टों को और न ही बुरे पुरुषों या स्त्रियों को इस सत्य के सुसमाचार को दूसरों को सुनाने के लिए चुनते हैं। परमेश्वर के लोगों को इस मामले पर अच्छे से ध्यान देना चाहिए, और दूसरों की सेवा को स्वीकार नहीं करना चाहिए जिनका हृदय परमेश्वर के साथ संगती में नहीं हो। जैसा की भजन संहिता 50:16,17 वचनों में "परन्तु दुष्ट से परमेश्वर कहता है: तुझे मेरी विधियों का वर्णन करने से क्या काम? तू मेरी वाचा की चर्चा क्यों करता है? तू तो शिक्षा से बैर करता, और मेरे वचनों को तुच्छ जानता है" में बताया गया है। `Z.'04-28` R3309:4 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (12 अक्टूबर)

मत्ती 6:28 जंगली सोसनों पर ध्यान करो, कि वै कैसे बढ़ते हैं...।

हमारे प्रभु इस बात पर हमारा ध्यान खींचते हैं कि प्रकृति में ऐसी सरल चीजों का अध्ययन और उनपर ध्यान कैसे किया जाना चाहिए। जीवन के सभी मामलों के संबंध में सीखे जाने वाले सबक तभी उपयोगी होंगे जब सही दृष्टिकोण से उनका अध्ययन किया जाये - सृष्टिकर्ता में विश्वास, और एक अहसास कि वह निश्चित रूप से बहुत उच्चतम और बहुत ही

महान गुणों की अभिव्यक्ति हैं और इनका प्रतिनिधितत्व करते हैं जिसकी कल्पना मानव मन कर सके - और वह न्याय में परिपूर्ण हैं, बुद्धि में परिपूर्ण हैं, शक्ति में परिपूर्ण हैं, प्यार में परिपूर्ण हैं - जो ह्रदय इस तरह से ध्यान करता है वह ह्रदय प्रगति करता है, अनुग्रह में, ज्ञान में, प्रेम में बढ़ता है। वह ह्रदय जो छोटी चीजों पर विचार करने में असफल रहता है, वह बड़ी चीजों की सराहना करने में असक्षम होता है, और इस प्रकार से वह परमेश्वर के प्रति उचित विचार रखने से और उनकी योजना की उचित प्रशंसा करने से और इस प्रकार उनके चरित्र की उचित प्रशंसा करने से बाधित होता है। आमीन `Z.'04-37,38` R3313:2

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (13 अक्टूबर)

याकूब 2:18 ...मैं अपना विश्वास अपने कर्मों के द्वारा तुझे दिखाऊंगा...।

यद्यपि वर्तमान युग में परमेश्वर के लोगों का उनके कर्मों से न्याय नहीं किया जाता है, बल्कि उनके विश्वास से किया जाता है, फिर भी, कर्मों की आवश्यकता होगी। हमारे कर्मों से हम अपने विश्वास को प्रदर्शित करते हैं, और परमेश्वर का धन्यवाद् हो, कि अपरिपूर्ण काम परमेश्वर के प्रति हमारे इरादों और हमारी इच्छाओं में की वफादारी का प्रदर्शन कर सकते हैं...यदि हमारे काम परमेश्वर को हमारे विश्वास की ईमानदारी का प्रदर्शन

करेंगे, तो वह विश्वास उनके लिए ग्रहणयोग्य होगा और हमारी गिनती परिपूर्ण लोगों में की जायेगी और हमें राज्य में हिस्सा दिया जाएगा और सभी बहुत ही बड़ी और बहुमूल्य वस्तुएं जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखने वालों के लिये तैयार की हैं (1 कुरिन्थियों 2:9) हमें दी जाएँगी - जो न केवल शब्दों से बल्कि कर्मों से भी परमेश्वर को प्रेम करते हैं - ये वस्तुएं उन लोगों के लिए हैं जो जीवन के कर्मों के द्वारा, परमेश्वर के प्रति अपने प्यार को प्रदर्शित करने का भरसक प्रयास करते हैं। `Z.'04-45` R3318:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (14 अक्टूबर)

नीतिवचन 21:3 धर्म और न्याय करना, यहोवा को बलिदान से अधिक अच्छा लगता है।

हमें प्रेम में बढ़ना है, और प्रेम मुख्य सिद्धांत है; लेकिन इससे पहले कि हम प्रेम की बढ़ोतरी करने में ज्यादा उन्नति कर सकें, हमें अवश्य न्यायी, सही और धर्मी होना सीखना चाहिए। नीतिवचन में दिए गए विषय की सही प्रस्तुति यही है कि किसी मनुष्य को उदार होने से पहले उसे न्यायी या धर्मी होना चाहिए। इसलिए प्रभु के लोगों के लिए, जो कि नई सृष्टि हैं, यह लाभदायक है, कि वे लगातार न्याय के इस विषय का अध्ययन करें और दिव्य वचनों से समझकर मन में बैठाये हुए सबक को प्रतिदिन

अभ्यास में लाएं। जो लोग प्रेम में बढ़ने की शुरुआत करने से पहले इस (न्याय के) चरित्र की उचित नींव प्राप्त करते हैं, वे पाएंगे कि वे ठीक से उन्नति कर रहे हैं। अन्याय या अन्याय के गलत विचारों पर स्थापित सभी प्रेम भ्रमित है, और यह वह प्रेम नहीं है जिसकी प्रभु को अपना चेला बनाने की परीक्षा के रूप में आवश्यकता होगी। `Z. '04-56,57` R3323:1
आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (15 अक्टूबर)

मरकुस 11:22 परमेश्वर पर विश्वास रखो ।

क्योंकि हम प्रभु के अनुयायी बन गए हैं, इसलिए हमारे प्रतिदिन के अनुभवों में मार्गदर्शन और सुरक्षा प्रकट रूप से अदृश्य शक्ति के द्वारा मिलती है। ऐसा इस उद्देश्य से किया जाता है ताकि मसीह की पाठशाला में शिष्यों के रूप में, हम सभी प्रभु की ओर से सिखाएं जाएँ और आत्मा के अनुग्रहों में अधिक से अधिक उन्नति करें और विशेष रूप से अधिक विश्वास में बढ़ें। विश्वास की यह वस्तु कितनी महत्वपूर्ण है, शायद हम इसकि पूरी तरह से सराहना अभी नहीं कर सकते हैं। विश्वास एक ऐसी बात प्रतीत होती है जिसे प्रभु विशेष रूप से उन लोगों में खोजते हैं जिन्हें अभी उनका चेला बनने के लिए बुलाया गया है। तो हमारे विश्वास के

अनुसार हम क्लेशों में भी आनंदित होंगे। हम पीड़ा का आनंद नहीं ले सकते; हम उन विचारों का आनंद ले सकते हैं जिसे विश्वास इन पीड़ाओं के साथ जोड़ देता है, अर्थात्, ये पीड़ाएँ पल भर के हल्के से क्लेश हैं जो हमारे लिये बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करते जाते हैं। `Z. '04-59` R3324:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (16 अक्टूबर)

भजन संहिता 107:29 वह आंधी को थाम देता है और तरंगें बैठ जाती हैं

हम जो वर्तमान युग के हैं, मानवीय भावनाओं के उग्र तत्वों, विपक्षियों, आदि के बीच में प्रभु के कारणों का प्रतिनिधित्व करते हैं। और यदि हम विश्वास के द्वारा प्रभु को अपने साथ जहाज पर देखने में सक्षम न हों, और इस विचार को समझने में सक्षम न हों कि प्रभु के पराक्रम की शक्ति उनके खुद के समय में उनके तरीकों से दुनिया से शांति की बात करेगी, तो कभी - कभी हमारे ह्रदय निराश हो जायेंगे। अगर हमारे सामने एक अंधेरा घंटा हो - अगर ऐसा समय आ जाए जब तूफानी हवाएँ इतनी भयंकर हों कि बहुत लोग डरते और कांपते हुए चिल्ला उठें, तो इन परिस्थितियों में हमें आश्चर्य नहीं करना चाहिए। आइए हम अच्छी तरह से वर्तमान समय के अनमोल अनुभवों को जानें, ताकि फिर हमारा विश्वास

हमें असफल न करने पाए - ताकि सबसे अँधेरे घंटे में हम उनके गीत गायें और उनमें आनन्दित हो सकें जिन्होंने हमसे प्रेम किया और हमें अपने बहुमूल्य लहू से खरीदा, और हम मूसा और मेमने के गीत गाते रहें। Z. '04-60` R3325:4 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (17 अक्टूबर)

भजन संहिता 91:4 वह तुझे अपने पंखों की आड़ में ले लेगा, और तू उसके परों के नीचे शरण पाएगा ।

परमेश्वर अपने वफादार और विश्वासी बच्चों को अपने ह्रदय के इतने करीब इकठ्ठा करते हैं कि वे परमेश्वर के प्रेम की गर्मी को महसूस कर पाते हैं। और इन बच्चों के दिल की भाषा यह होती है कि - “मै तेरे तम्बू में” -- आपकी सुरक्षा के अंदर - “युगानुयुग बना रहूंगा”। “मैं तेरे पंखों की ओट में शरण लिये रहुंगा, क्योंकि तू मेरा शरणस्थान है, और शत्रु से बचने के लिये ऊंचा गढ़ है। क्योंकि हे परमेश्वर, तू ने मेरी मन्नतें सुनीं”-- मेरे समर्पण को स्वीकार किया है, “जो तेरे नाम के डरवैये हैं, उनका सा भाग तू ने मुझे दिया है”। (भजन संहिता 61:4,3,5) `Z.'04-75` R3331:6 “मैं तेरी सामर्थ्य का यश गाऊंगा, और भोर को तेरी करूणा का जयजयकार

करूंगा। क्योंकि तू मेरा ऊंचा गढ़ है, और संकट के समय मेरा शरणस्थान ठहरा है। (भजन संहिता 59:16) आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (18 अक्टूबर)

नीतिवचन 18:9 जो काम में आलस करता है, वह बिगाड़ने वाले का भाई ठहरता है।

प्रभु के समर्पित लोगों ने कुछ मामलों में प्रभु के मन को समझने में चाहे कितनी भी ज्यादा बढ़ोतरी की हो, यदि हम उनमें से किसी को भी कोई चीज की बर्बादी करते हुए देखेंगे तो हमें अवश्य ये महसूस होगा कि उन लोगों में इस चरित्र की विशेष रूप से कमी है। उपहार की प्रशंशा और उपहार देने वाले के प्रति आदर दिखने का मतलब है कि सब कुछ जो हमें अपने स्वर्गीय पिता से मिलता है - सांसारिक और आत्मिक वस्तुएं - हम एक अच्छे भंडारी की तरह इन वस्तुओं की ध्यान से देखभाल करें। प्रभु के तोड़े वाले दृष्टान्त में वे हमारे प्रेम और जोश को काफी हद तक इस बात से मापते हैं की हम अपने सांसारिक और आत्मिक हुनर, अवसरों, आशीषों का जो हमें अभी दी गयी हैं, इनका किस तरह से उपयोग या दुरूपयोग करते हैं। `Z. '04-77` R3333:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (19 अक्टूबर)

मत्ती 10:8 तुम ने सेंतमेंत पाया है, सेंतमेंत दो।

जो कोई भी इस आशीषित भोजन के लिए भूखा और प्यासा हो, जिसने हमें बहुत ही तरोताजा किया है और मजबूती दी है, आइये उन सभी को यह आशीषित भोजन देने के लिए हम सतर्क रहें। यदि उन्हें यह भोजन नहीं मिलेगा तो वे दूसरे प्रावधानों की तलाश में मार्ग में ही मुरझा जायेंगे। हमारे पास बिलकुल वही चीज है जिसकी जरुरत विश्वास के घराने के सभी लोगों को है; जिसके बिना वे खड़े नहीं रह सकते, वे निशाने की ओर दौड़ नहीं सकते, और वे निश्चित रूप से निराश हो जाएंगे... इस जीवन की रोटी को दूसरों तक भेजने के लिए हमारे पास जो भी आर्थिक साधन हो, या हमारे पास सत्य का जो भी ज्ञान हो, उसे न तो स्वार्थी ढंग से खुद के लिए इकठ्ठा करना है और न ही स्वार्थी ढंग से खुद ही चखना है। हमें हमारे सभी साधनों और सत्य के ज्ञान को प्रभु को समर्पित कर देना चाहिए, और उस समर्पण में से प्रभु दूसरों के लिए आशीष लाएंगे और हमारे मन और दिल को ज्यादा बड़ी आशीषें देंगें। Z.'04-78` R3333:6-3334:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (20 अक्टूबर)

मत्ती 10:16 सांपों के समान बुद्धिमान और कबूतरों के समान भोले बनो।

ओह, कितना अच्छा हो कि प्रभु के सभी प्रिय लोग सच्चाई की सेवा करने के अपने प्रयासों के सिलसिले में बुद्धि का उपयोग करने के मूल्य को सीख सकें! हमारे प्रभु ने न केवल हमें सांपों के समान बुद्धिमान और कबूतरों के समान भोले बनना सिखाया, बल्कि वे किसी और समय पर प्रेरितों को यह कहकर कि, "मुझे तुम से और भी बहुत सी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते" (यूहन्ना 16:12), अपने जीवन में इस पाठ का एक उदाहरण दिखाते हैं। हमें भी, यह सीखना चाहिए कि कुछ सच्चाइयों का जिक्र करने के लिए उपयुक्त और बेवक़्त समय है, और यह कि उन्हें प्रस्तुत करने के बुद्धिमान और मूर्खतापूर्ण तरीके हैं। यह काफी नहीं है कि हम असत्य नहीं बोलते; यह भी काफी नहीं है कि हम सच बोलें; इसके अलावा हमें यह देखना चाहिए कि हम प्रेम से सच्चाई बोलते हैं, और जो प्रशिक्षित (trained) प्रेम होता है वह बुद्धि का उपयोग करता है ताकि और अधिक अच्छा परिणाम प्राप्त कर सके।`Z. '04-91` R3339:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (21 अक्टूबर)

लूका 11:2 हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है; तेरा नाम पवित्र माना जाए।

यह वचन गहरा प्रेम, दिव्य भलाई और महानता की सराहना, और इस रीति से भय - भक्ति से पूर्ण आदर को दर्शाता है। परमेश्वर से प्रार्थना करते समय हमारी सोच में सबसे पहले अपने लिए स्वार्थी विचार नहीं आने चाहिए, और न ही सबसे पहले जो हमारे लिए अनमोल हैं उनकी भलाई के बारे में सोचना चाहिए; बल्कि हमारे सभी विचारों, लक्ष्यों और गणनाओं में सबसे पहले परमेश्वर होने चाहिए। हमें ऐसी कोई भी प्रार्थना नहीं करनी है जो हमारे स्वर्गीय पिता के नाम को आदर न दे; हमें ऐसा कुछ भी अपने लिए, या अपने प्रिय लोगों के लिए नहीं मांगना है जिसकी अनुमति पिता ने हमें नहीं दी है या जिसे पिता की पूरी मंजूरी नहीं मिलेगी। शायद हृदय के किसी और गुण की तुलना में, यदि हमारे हृदय में परमेश्वर के प्रति भय भक्ति की भावना नहीं होगी, तो हमारा नाम मसीही में से निकाल दिए जाने का खतरा ज्यादा बड़ा है।`Z. '04-118` R3352:2 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (22 अक्टूबर)

मत्ती 20:22 जो कटोरा मैं पीने पर हूं, क्या तुम पी सकते हो?

सकेत मार्ग में हमारे प्रभु का साहस हमें सराहना से भर देता है। क्या मजबूत चरित्र था उनका! उनके अंदर वापस मुड़ने का कोई विचार नहीं था; वे अपने पिता की इच्छा को पूरी करने के लिए दृढ़ थे - दूसरों के हित के लिए खुद को बलिदान करने के लिए तैयार थे। प्रेरितों ने अपने सामने एक श्रेष्ठ आदर्श देखा - विनम्रता में महानता का, सेवा के द्वारा जय पाने का। यह अच्छा होगा कि हमारे दिमाग में यह बात स्पष्ट रूप से बैठ जाये कि जब तक हम प्रभु यीशु के कटोरे में से नहीं पियेंगे और उनकी मृत्यु में नहीं डूबेंगे, तब तक हमें उनके राज्य की महिमा में हिस्सा नहीं मिलेगा। आइए हम इस आवश्यक अनुभव को प्राप्त करने के लिए बाकि सब चीजों को हानि और बेकार समझें। जब हम इन अनुभवों से होकर गुजरें, तब भयभीत न हों, न ही दुःख रूपी अग्नि जो हमें परख रही है, इस से यह समझ कर अचम्भा करें कि कोई अनोखी बात हम पर बीत रही है। इसके विपरीत, हमारा बुलावा इसी के लिए है, ताकि हम अभी उनके साथ दुख उठाएं और बाद में उनके साथ महिमा भी पाएं। `Z. '04-138,139` R3362:2,5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (23 अक्टूबर)

मत्ती 20:27 और जो तुम में प्रधान होना चाहे वह तुम्हारा दास बने।

अन्य-जातियों के बीच में राज्य करनेवाला ईश्वर के तुल्य होता है और वह सेवा करता नही है, पर अपनी सेवा करवाता है । लेकिन प्रभु यीशु मसीह के पीछे चलने वालों के लिए यह नियम उल्टा हो जाता है । वह जो सब से ज्यादा सेवा करता है, उसी को सबसे ज्यादा महिमा मिलती है। दिव्य कर्म में जब वस्तुएँ सजाई जाती है तो उनकी खूबसूरती बिल्कुल अलग होती है । परमेश्वर का यह नियम दुनिया की आत्मा के बिल्कुल विपरित है, कितना उचित नियम है सचमुच जो लोग प्रभु यीशु मसीह के पीछे चलते है उन्हें दुनिया के लोग विचित्र समझते है क्योंकि इनमें एक दूसरे की सेवा करने का जनून होता है और जब भी मौका मिलता है यह लोग सबकी हर परिस्थिति में भलाई ही करना चाहते है । आमीन। `Z. '04-140` R3363:1

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (24 अक्टूबर)

लूका 23:26 "जब वे उसे लिए जाते थे, तो उन्होंने शमौन नाम एक कुरेनी को जो गांव से आ रहा था, पकड़कर उस पर क्रूस को लाद दिया कि उसे यीशु के पीछे पीछे ले चले"॥

हमें अक्सर यह आशचर्य होता है कि, उस समय पतरस और यहून्ना और याकूब कहाँ थे? उन्होंने स्वामी के बोझ को क्यों नहीं देखा और उनकी मदद के लिए क्यों नहीं दौड़े? यदि हम शमौन से जलन कर सकते, जिसे हमारे स्वामी के क्रूस के बोझ को उठाने का एक विशेष अधिकार मिला था, तो आइए हम समझें कि प्रभु के बहुत से भाई हैं, जो अभी के समय में चिन्ह के रूप में प्रतिदिन क्रूस उठा रहे हैं। और इन भाईयों की मदद कर पाना हमारा विशेष अधिकार है। और प्रभु यीशु ने वचनों में कहा भी है कि जो भी प्रभु के विश्वासी चेलों में से किसी की भी सेवा करेगा, उसे प्रभु अपनी सेवा करने के बराबर मानेंगे। ... जैसे की लकड़ी का क्रूस हमारे प्रभु का सबसे भारी बोझ नहीं था, उसी तरह उनके चेलों के पास भी ऐसे क्रूस का बोझ है, जिसे दुनिया नहीं देख पाती है, परन्तु "भाईयों" को समझना चाहिए। गलातियों 6:2→"तुम एक दूसरे के भार उठाओ, और इस प्रकार मसीह की व्यवस्था को पूरी करो।" आमीन। `Z.'04-155` R3369:6

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (25 अक्टूबर)

2 इतिहास 19:11 ...हियाव बान्ध कर काम करो और भले मनुष्य के साथ यहोवा रहेगा।

जिसके पास जो भी कार्य है, उसे डरना नहीं चाहिए। जो कार्य हमें पसन्द नहीं है, जब हम उन कार्यों को दयालु तरीके से, न्याय और प्रेम के साथ करने की कोशिश करते हैं, तब आइये हम मनुष्य से न डरें, बल्कि प्रभु का भय रखें और उन्हीं को प्रसन्न करने का इरादा रखें। आइये दुनिया को उसकी लड़ाई खुद लड़ने दें: प्रभु उनकी निगरानी करेंगे और अन्त में परिणाम महिमामय होगा। आइये हम जो कि नए देश, नए राज्य के निवासी हैं, जो कि इस संसार का नहीं है, किसी भी शारीरिक हथियार का उपयोग लड़ाई के लिए न करें। बल्कि आत्मा की तलवार का उपयोग करते हुए आइये हम विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़ें, और उन महिमामय वस्तुओं को कस कर पकड़ लें, जिन्हें हमारे सामने रखा गया है। और न केवल खुद मजबूती से खड़े रहें, बल्कि जो लोग इसी पवित्र आत्मा से उत्पन्न हुए हैं और इसी स्वर्गीय सेना के सदस्य हैं -- उन सब को भी मजबूती से खड़े रहने में मदद करें। हम सब मसीह में भरपूर हैं जो देह का शिरोमणि है और हमारे उद्धार के कप्तान हैं। आमीन `Z'15-344`R5802:5 (Hymn 213)

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (26 अक्टूबर)

1 पतरस 5:7 और अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि उसको तुम्हारा ध्यान है।

यह बहुत सान्तवना और प्रोत्साहन देने वाला वचन है। फिर भी, जैसे जैसे परमेश्वर के परिवार में प्रभु के लोगों की सदस्यता के साल बढ़ते जाते हैं, और मसीह की पाठशाला में उनकी पढ़ाई चलती रहती है, वैसे-वैसे ही, इनको ज्यादा से ज्यादा स्पष्ट रूप से यह सीखना है कि, इनको अपनी बुद्धि के अनुसार परमेश्वर को अपना मार्गदर्शन करने के लिए नहीं कहना है; और न ही इन्हें अपनी इच्छा पृथ्वी पर या स्वर्ग में पूरी करने की विनती करनी है।

1) बल्कि, प्रभु से अपने छोटे या बड़े बोझों को बांटते समय, इन्हें–

2) प्रभु के प्रेम और उनकी सहानुभूति को महसूस करना है और खुद को उसके अनुसार ढालना है,

3) और प्रभु के वचनों से जो सान्तवना मिलती है, उसे मलहम की तरह अपने हृदय पर लगाना है,

4) और यह महसूस करना है कि यदि वे प्रभु में दृढ़ विश्वास और भरोसे के साथ बने रहें तो प्रभु उनके सभी अनुभवों को उनके लिए लाभ में बदलने की इच्छा रखते हैं और ऐसा करने की सामर्थ भी रखते हैं। आमीन `Z. '04-237` R3409:1

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (27 अक्टूबर)

भजन संहिता 31:15 मेरे दिन तेरे हाथ में है; तू मुझे मेरे शत्रुओं और मेरे सताने वालों के हाथ से छुड़ा।

प्रभु के सभी समर्पित दास, जब से वे मेम्ने के चेले बने तब से उन्होंने अपने जीवन को बलिदान करने के लिए भेंट में चढ़ा दिया है। यदि वे अपने समर्पण को लगातार महसूस कर पाएँ, तो वे किसी भी पल में प्रभु की ख़ुशी पर समर्पित के लिए तैयार होंगे और किसी भी माध्यम के द्वारा जिसकी अनुमति प्रभु अपने प्रावधानों के अन्दर देंगे। जो प्रभु के समर्पित लोगों में से, एलिजाह समूह के लोग हैं, उन्हें यह याद रखना चाहिए कि इनके सिर का एक बाल भी, पिता की जानकारी और अनुमति के बिना नहीं गिर सकता है। और इनके ह्रदय की भावना वही होनी चाहिए, जिसे हमारे प्रिय उद्धारकर्ता ने व्यक्त किया था -- जो कि, एलिजाह की देह के शिरोमणि हैं -- "जो प्याला मेरे पिता ने मुझे दिया है, क्या मैं उसे न पियुं"? इनके ह्रदय की भावना एक कवि की इस कविता से मेल खाती हुई होनी चाहिए: "चाहे जो भी भाग मैं देखूं, उससे मैं सन्तुष्ट हूँ, क्योंकि यह मेरे परमेश्वर का हाथ है, जो कि मुझे ले चलता है"। आमीन `Z.'04-237`R3408:5

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (28 अक्टूबर)

यशायाह 61:1-3 प्रभु यहोवा का आत्मा मुझ पर है; क्योंकि यहोवा ने... मेरा अभिषेक किया है...कि खेदित मन के लोगों को शान्ति दूं;...राख दूर करके सुन्दर पगड़ी बान्ध दूं,...उनका विलाप दूर करके हर्ष का तेल लगाऊं...।

हमें नम्र, दीन और खेदित मन के लोगों को ढूंढ़ने का काम सौंपा गया है, जिन्होंने अपनी खुद की निर्बलताओं को और कमजोरियों को पहचाना है, और शरणस्थान और छुटकारे को पाने की तलाश में है। यह हमारे कार्य का हिस्सा है कि हम उन्हें परमेश्वर का मेम्ना दिखाएँ, जो सारे संसार के पापों को ले जाता है; और उन्हें मृत्यु की राख के लिए पुनरुत्थान की सुन्दरता को दिखाएँ; और उस महिमा को दिखाएँ जिसका वादा प्रभु ने किया है कि शीघ्र ही वो महिमा अभी के समय के सारे भारीपन की आत्मा, और निराश और दुःख और परेशानी का स्थान ले लेगी। यह हमारा अधिकार है कि हम ऐसे लोगों को बताएं कि "सवेरे आनन्द पहुँचेगा" (भजन संहिता 30:5) और उनकी मदद करें -

1) ताकि वे एक ही बार में उठकर यश का ओढ़ना पहन लें,
2) और वे अपने मुँह में हमारे परमेश्वर की करुणा के "नए गीत" के साथ नये जीवन की चाल चलना शुरू कर दें। आमीन `Z.'04-295` R3436:1

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (29 अक्टूबर)

2 कुरिन्थियों 4:8-10 हम चारों ओर से क्लेश तो भोगते हैं, पर संकट में नहीं पड़ते; निरूपाय तो हैं, पर निराश नहीं होते। सताए तो जाते हैं; पर त्यागे नहीं जाते; गिराए तो जाते हैं, पर नाश नहीं होते। हम यीशु की मृत्यु को अपनी देह में हर समय लिये फिरते हैं; कि यीशु का जीवन भी हमारी देह में प्रगट हो।

जो अभी के जीवन में, प्रभु के निमित्त, सच्चाई के निमित, सबसे बड़े अपमान, सबसे बड़े निरादर, बड़े से बड़े क्लेशों, बड़ी से बड़ी ताड़नाओं को आनन्दपूर्वक सहते हैं, और इस तरह से अपने आदर्श और स्वामी प्रभु यीशु मसीह के जैसे अनुभवों से होकर गुजरते हैं, उनके लिए निश्चय उनकी वफ़ादारी के अनुसार, जो वे इन बलिदानों में दिखाते हैं -- भविष्य में बड़ा इनाम मिलेगा; -- जैसे कि प्रेरित ने कहा है, "एक तारे से दूसरे तारे के तेज में अन्तर है”(1 कुरिन्थियों 15:41)। आमीन `Z. '01-55` R2762:4

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (30 अक्टूबर)

मत्ती 6:24 कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता।

“तुम परमेश्वर और धन दोनो की सेवा नहीं कर सकते”। हम इस बात को अपने अनुभव और ध्यान से देखने के द्वारा मानेंगे कि, एक नियम की तरह हम यह पाते हैं कि लोग आत्मिक चीज़ों में या तो ठण्डे होते हैं या गर्म होते हैं। हमें "पहले (मुख्य रूप से) परमेश्वर के राज्य की खोज" करनी है (मत्ती 6:33)। यही हमारी मुख्य चिन्ता का विषय होना चाहिए और हमारा सारा समय, पूरा ध्यान, सभी विचार, पूरी ऊर्जा, प्रभावित करने की सारी क्षमता और उन सभी साधनों को जो हमारे पास हैं, हमें इस मुख्य कार्य में लगा देना है। और इस जीवन को जीने के लिए जरुरी समझी जानेवाली वस्तुओं को जिस अनुपात में हम स्वर्गीय वस्तुओं के लिए बलिदान करने को इच्छुक होंगे, उसी के द्वारा हमारा परमेश्वर की ओर प्रेम और उत्साह प्रगट होगा। आमीन `Z. '01-61` R2765:5

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (31 अक्टूबर)

भजन संहिता 63:3 क्योंकि तेरी करूणा जीवन से भी उत्तम है मैं तेरी प्रशंसा करूंगा।

जिन लोगों ने परमेश्वर के अनुग्रह के स्वाद को चख लिया है, जो प्रभु के समर्थन को, उनकी करुणा को, जीवन से भी उत्तम मानते हैं और जिन्होंने उनकी वेदी पर हर प्रकार की अच्छी सांसारिक चीज़, आशा और महत्वाकांक्षा को ख़ुशी से रख दिया है, वे दूसरों को बड़े आनन्द के साथ सुसमाचार सुनाते हैं। जिन्होंने इन्हें अन्धकार से बाहर निकालकर अपनी अद्भुत ज्योति में लाया है, वे उनकी प्रशंशा और स्तुति करके अति आनन्दित होते हैं। इनके लिए सुसमाचार का सन्देश इतना अच्छा है, कि, वे इसे खुद तक सिमित नहीं रख पाते हैं। उन्हें इस सन्देशे को सुनाने के लिए कुछ पगार नहीं देनी पड़ती है, बल्कि यदि इन्हें अपना सब कुछ खर्च भी कर देना पड़े, तो भी वे हर किमत पर इस सन्देशे को सुनाने के लिए और इससे जुड़े परमेश्वर के समर्थन और अनुग्रह को पाने के लिए तैयार रहते हैं। फिर चाहे इस किमत के रूप में उन्हें कुछ परेशानियों उठानी पड़े, पैसे खर्च करने पड़े, सांसारिक मित्रता को खोना पड़े, तनाव से होकर गुजरना पड़े, दुनिया और नाम के ईसाइयों के क्रोध को सहना पड़े; वे इस सुसमाचार को किसी भी किमत पर सुनाकर अति आनन्दित होते हैं। आमीन `Z. '01-246` R2852:4